३२६

४/२

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

□

संचालक-मंडल

पाण्डेय जगन्नाथप्रसाद सिंह : सिपाही सिंह श्रीमन्त

पाण्डेय कपिल : पाण्डेय सुरेन्द्र : पी० चन्द्रविनोद

कृष्णानन्द कृष्ण : कन्हैया प्रसाद सिन्हा

□

प्रकाशक

भोजपुरी संस्थान; २, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-८०००० १ :: दूरभाष : २४१७५

□

दाम/एक अंक : एक रुपया/लगातार चार अंक : डाक खर्च समेत चार रुपया

□

मुद्रक

कर्म प्रेस, लोदीपुर, पटना-१ :: दूरभाष : २४४५६

भोजपुरी में प्रकाशित होनेवाली नयी से नयी पुस्तकों की हमें आवश्यकता रहती है। लेखकों और प्रकाशकों से प्रार्थना है कि हमसे सम्पर्क बनाये रखें और प्रत्येक नये प्रकाशन की सूचना हमें अवश्य दें। खबर देते वक्त कमीशन की दर भी सूचित करें जो कि हमें १२ से २० या इससे अधिक प्रतियों पर दिया जा सकता है।

भोजपुरी के जो प्रकाशक पुस्तकों के विक्रय का काम करते हैं, वे हमारे सूचीपत्र के लिए लिखें। हमारे प्रकाशन बेचकर वे निश्चय ही लाभान्वित होंगे।

राधाकृष्ण प्रकाशन

२, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

www.bhojpurisahityangan.com

उरेह

[भोजपुरी संस्थान, पटना के त्रैमासिक मुखपत्र]

वर्ष ४ : अंक २

अप्रैल १९७९

रास में राधा/हरेन्द्रदेव नारायण

झनकल घुँघुरू लहर उठे केश-जाल
जमुना किनारे नाचे कुंजन में राधिका
मंदिर में दीया-बाती, नभ में प्रभाती जइसे
ओसहीं बेसुध बाड़ी प्रेम के आराधिका

हरि के बँसुरी वाजे कालिन्दी किनारे कहीं
प्रानवाँ में साँस वाजे जइसे दिन रतिया
जीव नाचे काल नाचे विपिन कराल नाचे
घड़केला राग सुन जमुना के छतिया

लवंगलता से हाथ लहक लहर उठे
अँखया झँपल, पैर थिरकत भँवरी
पल-घड़ी-निमिष-जगान्त-जुग एक में बा
राधिका के पास ठमकल काल लहरी

बिजुरी झमक जइसे नाचेला जलद बीच
ओसहीं निकुंज बीच नाचे ब्रज ललना
बँसुरी बजावे हरि कदम के डाढ़ झूले
जइसे सब सृष्टि डोले समय के पलना

गोविन्द निहारताड़े राधिका भरल बन
माया से भरल जइसे जीवन के जियरा
राधिका के चरण में सिधु के लहर गति
साँस-साँस में बसन्त कोइल के लहरा

□

www.bhojpurisahityangan.com

एगो फूल के नाम लीं/डा० जितराम पाठक

नाम लीं एगो फूल के
फूल
जवना पर औरत के
लचकदार कमान होखे तानल
बाकी केहू के ना होखे जानल
भा
जवना में मेहररुई सुगंध के सिन्होरा
होखे सहेजल
आ जवना में रस गगरी
छलकत होखे अगरी-कगरी
नइखे आवत जीभ पर नाम,
छोड़ीं, कवनो बात ना,
हो गइल काम,
आज आदमी के फूल से नाता टूटल
एकरे के कहल जाला,
करम फूटल
अतने से मिलल आँट
जे जीभ पर उतरल बा काँट
जवना के धार से
फूल के नाम लोहुआ जाता
एही से फूल के नाम जहुआ जाता
ई बात संयोग के बा
कि अब रोग भोग के बा
एह रोग से पहचान के धार
भोथर हो गइल बा
हलफी के छुअन
नइखे जगावत मुअन
मन सूख के रुख,
कतना रूखर हो गइल बा,
मोटहन भोग के स्थूल रेखा
उचरतिया
मन के भर तिया।

□

www.bhojpurisahityangan.com

एगो कविता/प्रो० विश्वरंजन

साथी !
अब धीरे-धीरे खत्माय लागल बा
आदमी आ आदमी के बीच समझदारी के दूरी
अब बुझाता कि आज तक ले के ओढ़ल सच्चाई झूठ रहे
हमनिये के बरखिलाफ साजिश के नया नया जाल बीन के
हमनीं के ठगल गइल, भुलावल गइल ।
जे चिचियात भीड़ सड़क पर लउक रहल बा
ओकर सब लोग अन्हार से उत्रिया के
निकल आइल बा अँजोर आ साफ हवा के खोज में ।
सच्चाई के बोल देवे खातिर बेचैन ई लोग
भेद खोल देवे के चाहता तोहरा सामने
तोहरा बदकिस्मती के, भाग भरोसे बइठल लोग के,
साजिश में लागल सुविधा भोगी लोगन के,
आ झोपड़ियन में आग लगावत हाथन के ।
नकाब में लुकाइल चोर डेरा रहल बा
कि सच्चाई के अंगुरी कहीं ठीक जगहा पर मत उठ जाये ।
इतिहास के साजिशन के खिलाफ लड़ाई
अब किला आ कोठी में ना
गली, सड़क आ बाजार में होई ।
साथी, देखऽ ई लोग के
इनकरो देह से निकले वाला महक
ठीक तोहरे नियर बा मेहनती, पसेनाइल, भुखाइल-टटाइल
लगातार छलल आ फुसलावल गइल ।
चीन्हऽ, मिल के एक जुट हो जा
हवा के हर झोंका संगे बदलत नारा में
आदमखोरन के बोली बदल जाला ।
तोहरा जिनगी के निम्मन बनावे के किरिआ खात ऊ लोग
रोज भेंटाई छूछ लोर टपटप चुआवत
तोहार दुश्मन बहरुपिया बा
जेकर कवनो भरोसा ना ।

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव, महल्ला आ टोला, हर मड़ई-पलानी से आवत आवाज सुनऽ
साथी, इतिहास के एह सिवान पर
एक जुट जोड़ाइल हाथन के संगे जोड़ द आपन हाथ
अब सब कुछ फैसला खातिर तइयार बा
कवनों सवाल नइखे बाँचल अब बहस खातिर
सब सवाल अब जवाब बनल तन गइल बा
कसाइल मुठियन जइसन।
साथी, आवऽ, हम, तू, सभे एक हो जाये
अपना जिनगी के बनावे खातिर
दुश्मन के हरावे खातिर। □

नवगीत/भोलानाथ गहमरी

चैता के सपना, हर रंग में रंगा गइल,
ओठन पर मौसम के फूल मुस्कुरा गइल

किरनन के बंधल पांखि आज खुले लागल,
धूप के खेलवना तुतला के बोले लागल,
दिन सगरे जवा-कुसुम झील में नहा गइल।
चैता के सपना.....।

हो गइल हिया-हिया, रस-गंध के पियासा,
चिटुकी में घुलि गइल दरद के बतासा,
पोर पोर एक नसा चाँदनी उगा गइल।
चैता के सपना.....।

जोरे लागल रिस्ता, रेत से मछरिया,
आ गइल हथेली तक मान के तितिलिया
अदमी के आज सही रूप नजर आ गइल।
चैता के सपना.....।

गदराइल अंग-अंग, बगिया रस डोले,
सारी रात सोख हवा, बाजूबन्द खोले,
पतई पर झूलात, परान चरमरा गइल।
चैता के सपना.....।

□

www.bhojpurisahityangan.com

छोट कहानी

एगो आउर मउअत/सुधा वर्मा

जब ऊ इसकूल में पढ़त रहे, त एगो कहानी पढ़ले रहे। "लड़ाई में हारल, दुखी राजा ब्रूसो रात खानी एगो मकान में आराम करत रहे। ओही घड़ी, ऊ एगो मकड़ा के देखलस, जे बार-बार ऊपर जाय के कोसिस करे बाकिर बार बार फिसल के नीचे आ जाय। दस बार असफल होय के बाद एगारहवाँ बार ऊ ऊपर जाय में सफल हो गइल। राजा ब्रूसो ई देख के अपना अन्दर एगो नया सकती महसूस कइलस। फेर ऊ, दुगुना ताकत से लड़ाई कइलस आ लड़ाई जीत गइल।"

बाकिर ओह समय ई कहानी प ऊ धेयान ना देले रहे आ ऊ कहानी सिरिफ कहानी बन के ओकरा किताब में बन्द हो गइल रहे। तब के बात दोसर रहे। तब उ रोमियो-जूलियट के बात करत रहे, शीरी-फरहाद के बारत सोचतरहे आ लैला-मजनूँ ओकरा आँख में फिसलत रहे। सब कुछ बदल गइल रहे, जब से ऊ एम० ए० पास कइले रहे। हाई सेकेन्ड क्लास में पास करके, ऊ कुछ दिन तक काफी अकड़ल-अकड़ल रहल रहे।

हर इन्टरव्यू में जाय से पहिले, ऊ प्रेस कइल शर्ट-पैन्ट, आ चेरी-ब्लाज्म सेव्रश कइल जूता पेहन के जात रहे। बाकिर हर-बार ओकर जूता कुछ घिसत रहल आ शर्ट-पैन्ट के ऊपर कुछ मइल के परत चढ़त गइल। तब से दस बार अइसन हो चुकल रहे आ ऊ हर बार आपन डिग्री बगल में दबवले, ई दफ्तर से ऊ दफ्तर लोंघड़ात रहल। एगो कारण इहो रहे कि ओकरा पास क्लर्क के देवे के एगो दमड़ियो ना रहे। एक तरह से इन्टरव्यू देवे के बात ऊ मन से निकाल देले रहे।

बाकिर आज फेर ऊ एगारह वाँ बार इन्टरव्यू देबे जात रहे, आ खुश भी रहे। राजा ब्रूसो वाला कहानी ओकरा बार-बार इयाद आवत रहे। एगो आउर बात रहे कि विधायक जी के एगो चमचा ओकरा नोकरी दियावे के वादा कइले रहे। न्यूमरोलोजी के हिसाब से भी ऊ दिन फिट बइठत रहे।

खुशी-खुशी ऊ इन्टरव्यू देवे गइल बाकिर लउटते समय, न जाने कइसे ऊ सीढ़ी से फिसल गइल। पता ना ऑफिस के सीढ़ी चिकना रहे, कि

www.bhojpurisahityangan.com

विधायक जी के चमचा के उहाँ पहिलहीं से कुंडली मार लेवे के कारण ऊ भयभीत हो गइल रहे ।

कुहुआ होखे, ई समय ऊ ऑफिस के सीढ़ी के नीचे फुटपाथ पर गिरल पड़ल रहे । ओकरा देह में उहे फटही कपड़ा रहे आउर ओकरा ओठ से एगो पातर खून के धार बहत रहे । सिरिफ ओकर डिग्री एने-ओने हवा में फड़फड़ात रहे, सिरिफ एगो कागज उड़िया के बगल के नाला में तइरत रहे, जेह पर लिखल रहे "किंग ब्रूसो ऐण्ड स्पाइडर' ।

□

(पृष्ठ ५९ का शेषांश)

शास्त्री जी संस्कृत, हिन्दी अवरू भोजपुरी के प्रकाण्ड विद्वान रहनीं हाँ । इहाँ का हिन्दी अवरू भोजपुरी दुनों भासा में कविता कइले बानीं । भोजपुरी रउरा प्रतिभा के प्रसाद पाइ के कृतकृत्य हो गइल बाटे । शास्त्री जी बदुमुखी प्रतिभा का व्यक्ति रहलीं हाँ । भगवान् से हमार इहे प्रार्थना बाटे कि अइसन मनीषी के कीर्ति सदा अमर रहो ।

"परिवर्तनि संसारे, मृतः को वा न जायते ।
स जातो येन जातेन, याति देशसमुन्नतिम् ।।"

□

www.bhojpurisahityangan.com

तू अपने करनी के फल भोगिह/

जी० कल्ला सिंह

[लगभग १०५ बरिस पहिले गिरमिटिया मजूर का रूप में भारत से जाके सुरीनाम में बसे वाला भोजपुरिहा लोगन के आबादी, आज, सुरीनाम के कुल आबादी के ३८ प्रतिशत बा; आ एह लोग के मातृभाषा आजो भोजपुरिये बा। सुरीनाम में पहिले डच शासन रहे। एह म, हालैण्ड के राजधानी हेग में भारतवंशी सुरीनामी लोग जाके जमल बा। हेग में एह लोग के आपन संस्था बा—एकता भवन। एह संस्था का ओर से भारतवंशी सुरीनामी लोगन खातिर एगो पत्रिका निकलेला 'ऐसा समाचार'। 'ऐसा समाचार' में लेख कुल त रहेला डच भाषा में लिखल, बाकिर प्राय: हर अंक में सुरीनामी भोजपुरिहा कवि लोगन के लिखल कुछ भोजपुरी कविता रोमन लिपि में छपेला। त ओही पत्रिका 'ऐसा समाचार' के अंक ६/१० [सन् १९७९] में रोमन लिपि में छपल एगो भोजपुरी कविता 'उरेह' के पढ़वैया लोग खातिर देवनागरी लिपि में साभार उद्धृत कइल जाता। — सम्पादक]

तू आज तक केतना रंग बदलले ह
तोर मन करिया
तन करिया
विचार करिया
धन करिया
आदत करिया
चाल करिया आउर हाल करिया
तोर तो सब कुछ करिया ही करिया ह

तू अपने करनी के फल भोगिह.....

हम तोके ऊ अंधेर के गोदी से
केतना निकारे चहली
बाकी तू किलनी नियर
आन्ही में चपकल बाटे

तू अपने करनी के फल भोगिह.....

www.bhojpurisahityangan.com

हमके देख !
हम जुगनू नियर
तोर पीछा करीला
तोके चाहीला
आज दिवाली ह
मोका ह
ऊ कीचड़ से निकर आव
हम अंजोर में रहीला
तो पर तोरे खातिर तड़पीला
तोके ना लउके ह ?
जे रे····!

तू अपने करनी के फल भोगिहे·····

□

भोजपुरी उपन्यास के टटका पहचान

घर टोला गाँव

पाण्डेय जगन्नाथप्रसाद सिंह

अजिल्द ४.०० □ सजिल्द ६.००

भोजपुरी संस्थान, २, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१

लीला राम श्याम के

(भोजपुरी गीत-रूपक)

प्रेस में

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी—

अतुलबन्धु प्रकाशन, शिवाजी पथ, यारपुर, पटना

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

ई का ह/चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

बिना पाया के छोट दरवाजा। दिन के आठ बजत होई। खाटी पर गंजी आ लुंगी पहीर के बइठल आदमी लिखत रहे। खाटी के पुरुब आ उत्तर दिवार रहे। पुरुब के दिवार में जंगला रहे। खाटी के दखिन, आवे-जाये खातिर खाटी आ दिवार के बीच जगह रहे बाकिर ओहिजो दू आदमी बइठल रहन। खाटी के पश्चिम बरामदा पर तीन-चार आदमी बइठल रहन। एगो चारखाना के पुरान लुंगी पहिरले आ गमछा में खाली कटोरा बान्ह के गर्दन पर डलले रहे। एगो आदमी धोती के फाटल टुकडा पहिरले रहे आ खैनी बनावत रहे। उघारे रहे एही से खैनी मलत रहे त बाँहे ना गर्दनों के नस तना जात रही स। दखिन तरफ बइठल दूनो आदमी गोर-गोर रहन आ धोती-कुर्त्ता पहिरले रहत। एगो आदमी गमछा के माथा पर मुरेठा अस बन्हले रहे आ दोसरका अपना हाथ के लाठी के देखत रहे।

आधा धोती, पुरान मइल हाफ कुर्त्ता पहिरले, एक हाथ में लाठी आ दोसरा हाथ में झोरा लेले एगो आदमी के ओहीजा बढ़त देखनीं।

"डिब्बा खाली बा कि भरल ?" देख के बाकिर मुड़ी गाड़ के खाटी पर के आदमी बोलल : सरकारी नौकर ह। ब्लाक में काम करेला।

"भरले रहित त एह आफिस से ओह आफिस में मारल चलतीं ?"

नजर से टोवला पर अबगे जवन आदमी आइल हा ओकरा झोरा में एगो डिब्बा पटे पड़ल रहे।

"मारल चलत बानी कि भर-जाव ?"

"बुझते बानी त बोलीं कि कवनो उपाय बा ?"

"ढेर बा। बा काहे ना ? बाकि सुखले संख बाजेला कि पानी डाले पड़ेला आ बजावे पड़ेला ?"

दरबाजा के आगा में एगो खाली कुर्सी रहे। ओह कुर्सिया के तरफ ताकत फिर बोलल, "बइठीं। काहे नइखीं बइठत ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"हँ जी ! बइठीं !" उहाँ बइठल चारो आदमी बोलल ।

ऊ लाठी-झोरा धर के कुर्सी पर बइठल त बुझात रहे कि घोड़ा पर बइठल बा ।

"सबसे ज्यादा, एह साल के बाढ़ में, मकई के बर्बादी भइल ह। ! ना ?"

"मकई कहाँ रहे ?"

ऊ बोलल त खाटीवाला कुर्सी के दखिन तरफ देखे लागल । उहो देखे लागल । सब केहू देखे लागल ।

"का ह ?"

"खूँटी ।"

"डूबल रहे कि ना ?"

"रखले रहीं । उखाड़ब मत, हाकिम लोग आई तब देखा देब ।"

"आई के ? देखेवाला लोग एहिजे रहेला । ना जानी का ?"

"ऊपर के लोग आई तब ?"

"सीढ़ी पर चढ़े खातिर नीचे के खेंढ़ो पर पहिले पैर राखल जाला ।"

"बिलकुल ठीक कहनी हाकिम !" चारो आदमी बोलल ।

खैनी ठोक के तैयार भइल त खाटीवाला अपने लेलस आ कुर्सी पर बइठल आदमी के दिलवा देलस । जवन आदमी खैनो बनवले रहे ऊ हाथ झार के उदास हो गइल ।

"खइब ? खाये के मन होखे त कह निकाल दीं । निकालीं ?"

खैनी बनावे वाला सोचलस कि चार बार खैनी बनवनी । जब तैयार होखत बा केहू-ना-केहू आ जात बा । खैनी बँटा जात बा ऊ देखइले रह जात बा । खाटीवाला एक नम्बर के कांइयाँ ह । खैनी के बटुआ भरके राखेला बाकिर ओकर मुँह ना खोले । बोली बोल-बोल के दोसरा के खैनी खात रही । एको बार केहू के दे दी त चारो तरफ कहत चली ।.....ओकर ना सेब । पास में बा ना ।.....ऊ चुप्पे रहल । मुंड़ी झुका के तलहथी मलत रह

www.bhojpurisahityangan.com

दरवाजा के सामने सड़क उत्तरे-दक्खिने बिया । एगो आदमी चप्पल, लुंगी आ सैंडो गंजी पहिरले पान खात उत्तर से दक्खिन जात रहे । उहो एही ब्लाक में काम करेला । ब्लाके के क्वाटर में रहेला । ओकर क्वाटर मुश्किल से पचास गज होई । ऊ रुक के दरवाजा के तरफ देखत बोलल "देवास उठी कि ना ?"

"उम्मीद नइखे बुझात ।" ऊ खाटी पर से उतरत आ ओकरा तरफ बढ़त बोलल । अइंठ के देह तुरलस ।

"इहे तू चाहत रह ?"

"ना ! हम ना चाहत रहीं बाकिर अब बराबर मनाइला । जानत बानीं कि काहे ?"

"मजा मिल गइल । अउर काहे !"

"ठीक कहत बानी बाकिर खाली अतने भर ना । हम खेती-बारी के काम सीख के आइल रहीं । केहू हमरा दुआरियों पर झांके ना आइल । खुदे उठ के, लो। के खेत-खरिहान तक गइनीं । तबो लोग के कान पर जूं ना रेंगल । सब केहू जान छोड़ावे खातिर छटपटाते लउकल । साहब लोग गरियावत रहे भीतर तक हाथ डाल के आंत के गंदगी साफ करे खातिर आ लोग रहे कि हमरा छाया से भागल चलत रहे । चारो तरफ ताक-ताक के थाक चलल रहीं कि बाढ़ आइल । सहायता कार्य करे के आदेश मिलल । काम करे खातिर मन तैयार ना भइल बाकिर एह काम में ढिलाई करे वाला के नोकरी चल जाले, सुन के तैयार हो गइनीं । सामान ले लेनीं । रुपयो मिलल खर्चा करे खातिर । गांव के तरफ जाये में पड़ेवाली नदी के धारा के पास बइल के सोचत रहीं कि सब-के-सब धारा में बहवा दीं । साल भर से घुमत बानी बाकिर केहू कबो पानियों तक के ना पूछल आ हमरा भीतर सब लोग खातिर घृणा भरत रहल । धार में बहवा देवे खातिर तय कर चुकल रहीं कि हमरे हल्का के एगो साहु आ गइल । सामान के तरफ गीध अस ताकत बोलल—

"का ह हाकिम ?"

"सहायता के सामान ।"

"का का बा ?

"कुछुओ ना, आंटा ह । आदमी के खाये लायक नइखे ।"

www.bhojpurisahityangan.com

"कइसे ले अइनी हां ?"

"मजदूर मैदान होखे गइल बा।"

"सुनीं।" धीरे से बोलल, "हई बीस रुपया लिहीं। मजदूर आवत बा त हमरा साथे कर देब। रउवा जाईं। हम काल्ह बोरा पहुँचा देब। ओकरा के पैसा दे देले बानी ?"

"ना।"

"तब हम दे देब।"

"बाँटे के बा।"

"बँटा जाई।"

"हस्ताक्षर लेवे के बा।"

"हो जाई। फिकिर मत करीं; बाकिर एकर ना।"

"काहे ?"

"जाके कह देब कि नदी में बह गइल। दोसर सामान मिल जाई आ ओकरा खातिर बनवा देब केहू माँगी तब।"

"मुखिया के सामने बँटाये के चाहीं।"

"उहाँ के लिख देब कि हमरा सामने बँटाइल हा। अपने आदमी हईं।"

हल्का के लोग हमरा से हँसियो के बोलल रहीत त शायद हमार मन तैयार ना होइत बाकिर ओह लोग के उदासीनता आ आदमी के पुछाये के स्वाभाविक भूख, हमरा के तैयार करा देलस।

तब से कवनो विभाग के कवनो तरह के कुछ बाँटे के काम मिलेला तब हम सब केहू से पहिले तैयार हो जाइला। रउए कहीं कि लोग केकरो के पूछेला अपना लोभे से कि ना ? जब कबो ओकरा के कुछ ना देब त झूठो काहे खातिर पूछी।

एही साल जहिया बाढ़ आइल रहे ओकरा दोसरा दिन सहायता के बिस्कुट, चुड़ा ले के एगो गाँव में गइनीं त ओहिजा नउआ, जवन हमनी के काम करेला, के देखनी। बेचारा परिवार के साथ एगो बाबू साहब के दुआर पर रहत रहे, काहे से कि ओकर घर दह-बह गइल रहे। ओकरा हाथ में सहायता के

www.bhojpurisahityangan.com

सामान थम्हा देनी आ ऊ वाजिब बँटवारा कर देलस। हमरा सामनहीं लोग ओकरा के खा जाये वाली नजर से देखत रहे। लोगन के बर्वादी के थाह ओकरे नजर से कर के चल अइनीं त लोग ठेन बेसाह के ओकरा के मारल आ अपना दुआर पर से बरसात रात में भगा देल। कहत रहे लोग कि ढेर कानूनी हो गइल वा, रही त दुअरवो दखल कर ली।

आज सब गाँव में अइसन लोग वा जे हमनी तक मजदूरन के नइखे पहुँचे देत। हमनी के आ ओहनी के बीच में खाड़ हो जात बा। ओकनी के बले नेता बन जात बा। ओकर ना आपन उल्लू सीधा करत बा। जवन अफसर मन लायक नइखन करत उनकरा के चौक पर, भरल दुपहरिया में लंगटिया देत बा। इज्जत बाँच जाय आ उपरो से कुछ मिल जाय तब अउर का चाहीं ?"

"पीड़ित लोग के लिस्ट बना देनी ?"

"नहे नू बनावत बानी ………… जानत बानी हमरा हल्का में एगो नेताजी बाड़न। भेंटइहें नू त देरी ना करिहें कि इमानदारी बँटात रह त पहिले-पहला ऊहे पहुँचल रहन आ चले भर उठा के ले आइल रहन। जानत बानी क भइल हा ?"

"ना।" मुँह में के पीक फेंकत बोललन।

"बढ़वा के दोसरा दिने के बात ह। हेलिकाप्टर मन भर पावरोटी, बिस्कुट आ सतुवा उनका छत पर गिरवले रहे। सब के सब अपनहीं खा गइल लोग। बैनो-गाय के खिअवलस लोग बाकिर गाँव भर में केहू के ना देल। एक दिन भेंटइलन त पूछनीं कि लोग कहत बा, बात ठीक ह? सुनते भड़क उठलन। बुझाइल कि माथा नोचे आ देह पर के कपड़ा फाड़े लगिहें। कहे लगलन "बात मत चलाईं। एकरा चलते भाई से अलगा हो जाईं ?"

हम काहे के कहे जाईं कि अलगा हो जाईं। बाकिर बोलीं कि ई का ह ? का हो रहल बा, चारो तरफ ? इहे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भावना ह ?"

"सुनत बानीं कि बाढ़ सब गंदगी के बहा ले गइल।"

"गंदगी फैलावेवाला लोग त बहले बा।"

ऊ हंसत चल गइले त फिर से खाटी पर बइठ गइल। खैनी बनावे के इसारा करके लिखे लाभल।

□

www.bhojpurisahityangan.com

आचार्य महेन्द्र शास्त्री/डा० कृष्णदेव उपाध्याय

आचार्य महेन्द्रशास्त्री जी भोजपुरी के भगीरथ रहनी हां ! जवना निष्ठा अवरू एकान्त भावना से इहां का भोजपुरी के जनम भर सेवा कइनीं ओकर मूल्यांकन ना कइल जा सकेला। शास्त्री जी के जीवन में राजनैतिक अवरू साहित्यिक धारा सदा प्रवाहित पावल जाला। अपना जीवन के उषा काल में इहां का अध्यापन कार्य कइलीं। लेकिन शास्त्री जी के प्रतिभा के प्रसार खातिर इ क्षेत्र बड़ा संकुचित रहे। एह से इहां का समाज सुधार अवरू राजनीति के कामन के भी अपना हाथ में लेनीं।

समाज सुधार के क्षेत्र में इहां का ब्राह्मण लोगन खातिर 'हल कर्षण' आन्दोलन चलवलीं अवरू स्वयं खेत में हल जोत के ई दिखला देनीं कि अपना हाथ से काम कइला में कवनो दोस आ पाप ना लागेला। शास्त्रीजी के जमाना में स्त्री-शिक्षा के अत्यन्त अभाव रहे। इहां का गांव के लड़कियन के शिक्षा खातिर बालिका विद्यालय के स्थापना कइनीं। ओह घरी "अछूत" लोगन के बड़ा दुरदसा रहे। कवनो विद्यालय में ना त ऊ लोगन के भर्ती हो सकत रहे अवरू भर्ती भइला पर भी छात्रावास में रहे खातिर जगह ना मिलत रहे। शास्त्री जी गोरेयाकोठी के विद्यालय में—जहवां इहां का अध्यापन करत रहलीं—अनेक हरिजन छात्रन के भर्ती करा के छात्रावास में स्थान दिलवलीं।

सन् १९३० ई० में एह देस में जब गांधी जी के आंधी चलल तब शास्त्री जी भी एह आन्दोलन में सम्मिलित हो गइलीं अवरू आपन नौकरी छोड़ के राजनीति के मैदान में कूद पड़नीं। देश-सेवा के फलस्वरूप इहां का कई बार जेल के यातना भी सहे के पड़ल। परन्तु शास्त्री जी आजीवन देश-सेवा से विरत ना भइलीं देश के स्वतंत्र भइला पर कांग्रेसी लोगन के दल-गत राजनीति से उबिया के इहां का राजनीति से संन्यास ले लेनीं लेकिन सेवा के भावना इहां का हृदय से ना गइल।

समाज सेवा अवरू देश सेवा के जवन प्रबल भावना शास्त्रीजी के हृदय में प्रवाहित होत रहे ऊ अब साहित्य-सेवा के ओर मुड़ गइल। पहिले इहां का हिन्दी में कविता करत रहलीं लेकिन बाद में अपना मातृभाषा के माधुरी से आकर्षित होइके इहां का भोजपुरी साहित्य के भाण्डार भरे लगलीं। शास्त्रीजी के भोजपुरी कविता के कई गो संग्रह प्रकाशित हो चुकल बाटे जवना में 'चोखा'

www.bhojpurisahityangan.com

प्रसिद्ध हवे। शास्त्री जी के रचना में व्यङ्ग्य अवरू आलोचना के प्रधानता बाटे। इहाँ का समाज में प्रचलित बुराइन पर कस के प्रहार कइले बानी। शास्त्रीजी के समस्त रचना में हिन्दू समाज के दुर्दशा, अन्धविश्वास, परम्परागत रूढ़ि अवरू धार्मिक पाखंड के कटु समालोचना पावल जाला। आचार्य शास्त्रीजी अपना क्रिया-कलाप अवरू साहित्य-रचना के द्वारा हिन्दू समाज में व्याप्त बुराइन के प्रदर्शित कइके एह समाज के परिष्कृत करे के जीवन भर प्रयास कइलीं जवना में इहाँ के बहुत कुछ सफलता मिलल।

अइसन चोटी के विद्वान, समाज-सुधारक, राजनैतिक नेता अवरू भोजपुरी के कवि के दर्शन करे खातिर हमरा हृदय में बड़ा लालसा रहे। सन् १९५५ ई० में एगो अइसन मौका मिलल जवना मे शास्त्री जी के दर्शन हो सकल। हम ५५ साल के दिसम्बर के महीना में एगो आवश्यक काम से पटना गइल रहलीं। ओहिजा पता चलल कि भोजपुरी के सेवा में आपन तन-मन-धन खपा देवे वाला, शास्त्री जी एहिजे बानी। एह से उहाँ के दर्शन करे खातिर हमार मन आतुर हो गइल।

ओह घरी शास्त्री जी पटना के सांस्कृतिक विद्यापीठ में आचार्य के कार्य करत रहलीं। जब हम ओहिजा पहुँचली त एगो आदमी हाफ पैण्ट अवरू सैण्डो कट बनियाइन पहिन के एगो स्टूल पर बइठल रहे। हम ओह आदमी से पुछनीं कि शास्त्रीजी कहाँ बानीं? उत्तर मिलल—कहीं, का बात हवे? फिर हम कहनीं—उहाँ के हम दर्शन करे के चाहत बानीं। फिर जवाब मिलल—बइठल जाव। कहीं कइसे अइलीं हाँ। ई सुनि के हमरा समझे में देर ना लागल कि इहें का महेन्द्र शास्त्री जी हवी। हम सच कहत बानीं कि शास्त्री जी के प्रथम दर्शन कइला पर इहाँ के व्यक्तित्व के प्रति हमरा हृदय में थोड़े देर खातिर ही सही—बड़ा अनास्था पैदा हो गइल। हम समुझत रहलीं कि शास्त्रीजी सुसंस्कृत वेशधारी; सस्कृत के पण्डित होखब। धोती, अंगरक्षा, उत्तरीय अवरू सिर पर पगड़ी बँधले होखब अवरू ललाट पर चन्दन के तिलक विराजमान होई। लेकिन इहाँ के वर्तमान वेशभूषा देख के मन में बड़ा अचरज अवरू अश्रद्धा के भाव पैदा होखे लागल। शास्त्रीजी सदा के भाँति मूँछ मुड़वले, हाफ पैण्ट अवरू हाफ गंजी पहिनले स्टूल पर विराजमान रहलीं। संस्कृत के विद्वान अइसन वेशधारण कइले होई एह बात के हमरा मन में कभी कल्पना भी ना रहे। एह से आश्चर्य भइल स्वाभाविक रहे। शास्त्री जी हमरा नाम से परिचित रहनीं परन्तु रूप से अपरिचित। एह से जइसहीं हम आपन नाम

www.bhojpurisahityangan.com

लिहलीं उहाँ का बड़ा आदर-सत्कार से हमरा के बइठवलीं अवरू अगर हम भुलात नइखीं त वहाँ का जलपान भी करवले रहलीं।

शास्त्री जी से भोजपुरी साहित्य के सम्बन्ध में बहुत देर तक बातचीत होत रहल। एह वार्तालाप के बीच एह बात के हमरा स्पष्ट आभास मिलल कि एह बाहरी शुष्क वेश-भूषा के भीतर एगो सरस हृदय निवास कर रहल बा। भोजपुरी के प्रति उहाँ के लगन अवरू सेवा-भावना प्रशंसनीय रहे।

आचार्य महेन्द्र शास्त्री से हमार कवनो पूर्व परिचय ना रहला पर भी, इहाँ का हमरा के लेइ के बिहार के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामवृक्ष बेनीपुरी के पास गइनीं अवरू परिचय करवलीं। अतने नाहीं, बल्कि शास्त्री जी बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना के द्वारा हमार भाषण के आयोजन भी करवलीं। आजु शास्त्री जी नियर के व्यक्ति बा, जे हमरा नियर एगो तुच्छ साहित्यसेवी के सन्मान करे खातिर अतना उतजोग करी? ई महान् काम शास्त्री जी के समान उदार हृदय वाला विद्वान के ही रहे।

× × × ×

सन् १९६४ ई० के बात हवे। वाराणसी में एगो अखिल भारतीय भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन के आयोजन कइल गइल रहे जवना के हम स्वागत मंत्री रहनी। एकरा साथे विभिन्न साहित्यिक गोष्ठी के संयोजन के काम भी हमरा जिम्मे रहे। एह सम्मेलन में हम शास्त्री जी के आमंत्रित कइले रहलीं। इहाँ का एगो साहित्य-गोष्ठी के सभापति रहलीं जवना के उद्घाटनकर्ता रहले बाबू रघुवंश नारायण सिंह। रघुवंश नारायण जी अपना भाषण में अइसन कुछ बात कहले जवन बड़ा असामयिक अवरू अनुचित रहे। आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी अपना अध्यक्षीय भाषण में सिंह साहब के असमीचीन आक्षेप खातिर श्रोता लोगन से क्षमा के याचना कइनी लेकिन रघुवंश नारायण जी से कुछ ना कहनीं। ओ घरी हम देखनी कि शास्त्री जी सभापति के पद के उत्तरदायित्व के रक्षा खातिर कतना सजग बानी अवरू दोसरा आदमी के गलती के अपना सिर पर ओढ़ि के लोगन से छमा माँगत बानी। एह अवसर पर आयोजित भोजपुरी कवि सम्मेलन में भी उहाँ का आपन कविता सुनवले रहनी जवना के श्रोतागण बड़ा प्रशंसा कइल लोग। ओही रात खा शास्त्री जी पटना खातिर चल देनी। उहाँ का आपन झोला उठाई के विदा भइला के दृश्य आजुओ हमरा आँख में नाचत बाटे। शास्त्रीजी के संभवतः ई अन्तिम दर्शन रहे।

× × × ×

www.bhojpurisahityangan.com

एकरा बाद पत्र-व्यवहार द्वारा शास्त्री जी के गति-विधि के सदा पता चलत रहे । हम जतना उहाँ के बारे में पढ़नी ओतने ही ऊहाँ के प्रति आकर्षित होत गइनीं । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कर्मठ कर्णधार श्री पांडेय कपिल द्वारासम्पादित "आचार्य महेन्द्र शास्त्री—व्यक्तित्व और कृतित्व" नामक ग्रन्थ पढ़ के शास्त्री जी के प्रति जवन आदर रहे उ प्रगाढ़ श्रद्धा के रूप में परिणत हो गइल । हमहूँ चाहत रहली कि एह ग्रन्थ में शास्त्री जी अइसन महान् व्यक्तित्व पर कुछ लिख के आपन श्रद्धांजलि अर्पित कर सकीं लेकिन कई कारण से एकर अवसर ना मिल सकल ।

सन् १९७१ ई में हमार 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास" नामक पुस्तक प्रकाशित भइल । शास्त्री जी के आशीर्वाद प्राप्त करे खातिर एकर एगो प्रति हम उहाँ का सेवा में भेजलीं । शास्त्री जी के एगो पत्र आइल जवना में उहाँ का एक पुस्तक के भूरि भूरि प्रशंसा कइले रहलीं । लेकिन एगो बात पर शास्त्री जी बड़ा आपत्ति कइलीं । एह किताब में एगो अइसन आदमी के नाम गलती से छप गइल रहे जे भोजपुरी सेवा के नाम पर चार सौ बीसी के काम करत रहे अवरू आज भी करत बाटे । शास्त्री जी लिखनीं कि अइसन धूर्त आदमी के नाम एह पुस्तक में ना देवे के चाहत रहल हा । हम पत्र द्वारा आपन गलती स्वीकार कइलीं अवरू शास्त्री जी के आश्वासन दिहलीं कि अगला संस्करण में एह आदमी के नाँव पुस्तक से निकाल दीहल जाई ।

× × × ×

आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी भोजपुरी साहित्य के जवन एकान्त भाव से सेवा कइनीं ओकर लेखा-जोखा कइल बड़ा कठिन बा । इहाँ का भोजपुरी के सबसे पहिलीकी पत्रिका 'भोजपुरी' नाम से सन् १९४८ ई० में प्रकाशित कइनीं । शास्त्री जी भोजपुरी साहित्य के प्रचार अवरू प्रसार खातिर पहिलका भोजपुरी साहित्य सम्मेलन सन् १९४७ ई० में आयोजित कइनीं । सारन जिला में अनेक पुस्तकालयन के स्थापना कइके शिक्षा के प्रसार में योग दिहनीं । सारन (अब सीवान जनपद में बहुत से विद्यालयन के स्थापित कइके स्त्री-शिक्षा अवरू प्रौढ़ शिक्षा के आगे बढ़वनीं । राजनीति के क्षेत्र में भी इहाँ के योगदान कुछ कम नइखे । अनेक बार जेल के यातना भोगला पर भी इहाँ का राष्ट्रीय सेवा के चेक कभी ना भुनवनीं अवरू स्वतंत्रता सेनानी लोगन के अगली कतार में खड़ा रहला पर भी कभी पेन्शन खातिर अर्जी ना देनीं । [शेष पृष्ठ ४८ पर]

www.bhojpurisahityangan.com

लाजन जिऊ गड़ि गइल/ईश्वरचन्द्र सिनहा

भोजपुरी अकादमी पत्रिका के दूनो अंक अकादमी क कृपा से मिलल। पहिलका अंक कमियन के रहत नीक लागल। सोचली नया प्रयास हो, आगे चलके सुधार होई जाई। बाकी दूसरका अंक देखि के लाजन जिऊ गड़ि गइल। ओके अइसन लुकवावे के पड़ल कि घर के बिटिया पतोहन के हाथ न पड़ें पावे। नाहीं त ऊहो कहियन कि बाबुओजी ईहे कुल्हि पढ़लन। ओह अंक में एकठे लेख छपल हो, जेकर शीर्षक रहल हो—भोजपुरी लोक-कथा में काम वासना। लेखक त भोजपुरी साहित्य क्षेत्र के जानल मानल बाटन, बाकी भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति और रीतिरिवाज के ऊ केतना जानकार बाटन, एह पर ऊ लेख पढ़ले के बाद सन्देह पैदा होला। भोजपुरी लोक साहित्य थोड़ बहुत हमहू देखले बाटीं लेकिन ओम्मे अश्लीलता पहिले पहल एही लेख में देखे के मिलल। शृंगार के रचना भोजपुरी लोक साहित्य में भरल पड़ल बाय, बाकी ओह में मर्यादा के उलंघन कतों नाही मिलल।

लेख में जवन उदाहरण वासना के नाम पै देवल गयल हो, ओमें एको अइसन नाहीं हो, जोने के यथार्थ से कउनो सम्बन्ध होय। गोकि यथार्थो के नाम पै अइसन 'साहित्य' के अनुमति न त कउनो समाज दे सकत न कउनो भाषा। आजकल बड़ बड़ शहरन में अधनगी मेहरारुन के चित्र के साथ बहुत सी 'पत्रिका' तार से स्टिच कयल ऊंचे ऊंचे दाम पै बिकाली। अगर अइसने कवनो 'पत्रिका' में ऊ लेख छपल होत त कउनो आपत्ति न होत। ऊ लेख त छपल देश के पहिला भोजपुरी अकादमी के पत्रिका में, जेकर गठन भोजपुरी भाषा और साहित्य के समृद्ध बनावे खातिर भइल हो। जे लोग केतना दिन से भोजपुरी अकादमी के गठन के मांग करत रहलन, का ऊ लोग ओसे अइसने साहित्य के आशा कइले रहलन। ई लेख भोजपुरी भाषा, साहित्य, समाज और भोजपुरी के साहित्यकारन के मुंह पै अइसन तमाचा हो, जेकर निशान छूटे में कुछ समय लगी।

□

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी वेद/डा० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा

[३]

(१९-२०)

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इलस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।
सङ्ग च्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ।

(ऋ० १०, १९१, १-२)

हे शक्तिशाली अग्निदेव, अपना मित्र वास्ते जे कुछ बहुमूल्य बा, से अपने एकट्ठा करत बानी । होम करे वाला जगह पर, बारल गरला पर (अर्थात् तेज कइला पर—समिधा से पूरन भइला पर) सब धन हमनी वास्ते ले आईं ।

हे जगन्निवासी) मानवगण, तूं साथ मिलके चल, साथ साथ बोल, तोहरा लोगन के मन समान उद्देश्य वाला होखे, जेह प्रकार पुराण देवतागण एक आशायवाला होके अपना नियत स्थान पर बइठे लोग ।

(२०-२१)

समानो मन्त्र समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वोहविषा जुहोमि ।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वोमनो यथा वः सुसहासति ।

(ऋग्वेद १०, १९१,३-४)

हमनी के अो तोहरा लोगन के मन्त्र समान होखे, समिति समान होखे, संकल्प विकल्प करेवाला मन अो चेतना के आधार चित्त भी हमनी के समान होखे । अपने लोगन का सामने एगो समान निर्णय [मंत्र] हम रक्खत बानी । सबलोग का समिधा से हवन कइल जाव ।

अपने लोगन के संकल्प एक होखे अो अपने के हृदय भी एक समान होखे [जेह में निर्मल खून के संचार होखे] । अपने सभन मन के एक निर्णय पर पहुँचे, जेह से सब कोई प्रसन्नतापूर्वक सहगति प्रकट करे । एह सब मंत्रन में वेदकालीन ऋषि लोग संज्ञान [ऐकमत्य] देवता के पूरा तल्लीन होके स्तुति करत रहे अो सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था के नैतिक आधार तैयार करत रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

झगड़ा-झंझट के दूर कर सब टंटा मेटा के हृदय ओ चित्त के समान उद्देश्य वाला बनावे के बड़ा सुन्दर उपदेश बा।

[२३-२४]

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विद्धद्विश्वस्य मिषतो वशी
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

[ऋग्वेद १०, १९०,२-३]

महान जलराशि से पूर्ण समुद्र से संवत्सर (वर्ष) पैदा भइल। दिन और रात के विधान भइल, जे भी प्राणी-गण आपन आंख मूंदेलन अर्थात् जीवन धारण करेलन ओह सब को अधीश ईश्वर रहस।

हिरण्यगर्भ, विधाता महाराज पहिलहीं का समान सूरज ओ चन्द्रमा के बनवलन। चमकीला आकाश, पृथिवी, अन्तरिक्ष लोक ओ प्रकाश के भी विधाता महाराज बनवनी। एह मंत्रन में ऋषि-गण साफ कहतवानी कि निखिल विश्व के सृष्टि ईश्वर द्वारा भइल। आजकल के वैज्ञानिक लोग परमाणु या इलेक्ट्रन-प्रोटन से सृष्टि का बनला के विचार रखेला लोग, लेकिन ऋषि लोग के विचार रहे कि एतना अद्भुत विशाल संसार के रचे वाला विधाता हीं रहस।

[२५-२६-२९]

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातुते।
गर्भं धेहि सिनीवाली गर्भं धेहि सरस्वती।
हिरण्मयी अरणी यं निर्मन्थतो अश्विना।
तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि सूतवे।

(ऋ० १०,१८४,१-३)

विष्णु भगवान गर्भ के बनावस ओ ठीक से रचस। त्वष्टा महाराज सब रूप के रचना करस। प्रजापति शक्तिप्रद रस सींचस ओ धाता गर्भ के सम्यक् आधान करावस। देवी सिनीवाली गर्भ के धारण करावस, देवी सरस्वती गर्भ के धारण करावस। कमलपुष्प के धारण करे वाला देववैद्य अश्विनीकुमार गर्भ के सम्यक् रूप से धारण करावस। देववैद्य अश्विनीकुमार जेकरा के सोना का अरणी से मथे ला लोग, ओह गर्भ के हमनी हवन करके बोलावत बानी जेहसे

www.bhojpurisahityangan.com

दसवां महीना में पुष्ट बलवान दीर्घजीवी सन्तान पैदा होखे। प्राचीन काल का ऋषि लोग का दृष्टि में मनुष्य के जीवन बड़ा रहस्यपूर्ण रहे। मानवजन्म के ऊ लोग महान् यज्ञ समझत रहे। ओकरा में समस्त शारीरिक ओ दैविक विपत्ति का नाश करे वास्ते ऊ लोग सब देवता पितर के स्तुति करत रहे।

(२८-२९)

मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः।
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रुन्ताडिह वि मृधोनुदस्व।
इन्द्र क्षत्रमभिवाममो जोऽजायथा वृषन चर्षणीनाम्।
अपानुदो जनममित्रायन्तमुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम्।

(ऋग्वेद १०, १८०,२-३)

हे बलशाली इन्द्र! पहाड़पर घूमे वाला भयानक जंगली जानवर का समान तूं बहुत दूर से हमनी का पास आइल बाड़। अपना वज्र ओ अपना तेज अस्त्र के तुं पिजावत बाड़। हे महान इन्द्र, हमरा शत्रुगण के चूर कर द ओ जे भी हमनी से घृणा करत बा ओकरा के दूर खेद द। हे शक्तिपुञ्ज इन्द्र! जनता का ऊपर सुखद शासन-प्रशासन करे वास्ते ही तोहार जनम भइल। जे शत्रु लोग दुष्टतापूर्ण व्यवहार करत रहे ओकरा सभके तूं दूर भगा देवेल। देवतागण के भी तूं स्थान ओ स्वतंत्रता देवेल। प्राचीन भारतवर्ष में बड़ा लड़ाई-भिड़ांई होत रहे एह से ऋषिलोग मदद वास्ते इन्द्र नामक देवता के कल्पना कइलन। इन्द्र कवनो सात्विक चिन्तन के देवता ना रहस। लड़ल, ओ सोमरस पीके अघा के पड़ल रहल, ही इन्द्र के कार्य रहे।

आत्मा देवानां भुवनस्य गर्भो यथावशं चरति देव एषः
घोषा इदस्य शृण्विरे न रूपं तस्मै वाताय हविषा विधेम।

(ऋ० १०, १६८, ४)

समस्त देवतागण के आत्मा, निखिल विश्व के परमबीज, समस्त अनिल-देव, जहां जहां मन करत बा, उहां उहां घूमत रहेलन। चलला के उनकर विराट शब्द सुनाई पड़ेला बाकिर उनकर रूप देखाई ना पड़े। त्रिष्टुप् छन्द में आ धैवत स्वर में अनिल वातायन ऋषिजी बड़ा प्रेम से गावत बानी कि हमनीका सबलोग मिलके वात (वायु देवता) का वास्ते हविर्यज्ञ करीं। आज भी वायु-देवता के बड़ा पुरुषार्थ बा। बिना उहां के केहू जी ना सके। अन्तिम अवस्था में उद्जन के थैली (OXYZEN CYLINDER) लगावल जाला।

□

www.bhojpurisahityangan.com

ब्रजकिशोर के धुआँ*/जगन्नाथ

'धुआँ' भोजपुरी कहानी के सिद्ध हस्ताक्षर श्री ब्रजकिशोर के पहिल कथा-संग्रह ह। भोजपुरी कथाकारिता का इतिहास में 'धुआ' के प्रकाशन निश्चई एगो बड़ घटना मागल जाई। एह संग्रह में भोजपुरी कहानी अपना आधुनिकतम सोभ-नउक, सजल-सँवरल रूप में उतरल बा आ एह रूप में ऊ दोसरा भाषा के सोझा अपना स्थिति का हीनता के भावना से ग्रस्त-त्रास्त नइखे। संग्रह में ब्रजकिशोरजी के छव गो कहानी संग्रहित बाड़ीसन। संग्रह के नामकरण कवनो कथाविशेष के आधार पर नइखे भइल बलुक ओह परिवेश आ ओह परिस्थियन के आधार पर भइल बा जवना में संग्रहीत कहानियन के सिरिजना भइल बा। संग्रह के प्रारम्भ में लेखकीय वक्तव्य संग्रह का नाम के सार्थकता सहजे सिद्ध करता। लेखकीय वक्तव्य से आ संग्रह के नाम से स्पष्ठ संकेत मिलता कि संग्रहीत कहानियन के मूल स्वर एक बा। आ साँचो एकाध कहानियन के छोड़ के बाकी कहानियन के मूल स्वर मोटामोटी एके बा। संग्रह के मय कहानी आधुनिक चेतना का आधार-भूमि पर खड़ा बाड़ीसन। आधुनिक चेतना के जटिलता से कहानीकार वाकिफ बा आ अपना वक्तव्य में ऊ साफ-साफ संकारतो बा कि आधुनिक चेतना के जटिलता आधुनिक कहानी में कथ्यगत आ शिल्पगत जटिलता का पइसार के कारन बा। कहानीकार का शब्दन में 'समाज आ व्यक्ति दूनों घुटन से आ टूटन से भीतरे-भीतर धुँआ रहल बा। अतना कुहा छवले बा कि राह नइखे सूझत।.....पूरा सामाजिक आ राजनीतिक चेतना के ई धुँआं छाप ले ले बा जवपा का ओजे से ना संघर्ष के जुझारू तैयारी होता ना बदलाव के स्वागत।'

संग्रह के पहिलकी कहानी बालू के भीत' स्तरीयता का दृष्टि से संग्रह का कहानियन में प्रथम बा। अपना शिल्पगत सौन्दर्य आ कलात्मक कसावट खातिर ई कहानी बहुचर्चित हो चुकल बा। साँचो एह कहानी मे ब्रजकिशोर के शिल्पी रूप पूरा उभार पर बा। एह कहानी का कथ्य के लेके एकरा पर काफी टीका-टिप्पणी हो चुकल बा बाकिर जतना टीका-टिप्पणी भइल बा लेखक के एगो बादविशेष से प्रतिवद्धता देखा के। कुछ लोग एह प्रतिबद्धता के स्थापित क के एकरा में छौवियो निकाले के प्रयास कइले बा। साइत 'बालू के भीत' के कथ्यगत अझुरहट में अझुरा के एह तरह के धारणा स्थापित कइल गइल बा।

---

* धुआँ (कहानी-संग्रह) : लेखक - ब्रजकिशोर; प्रकाशक–भोजपुरी साहित्य संस्थान, शाहगंज, महेन्द्रू, पटना-६

www.bhojpurisahityangan.com

जो लेखक के कवनो वादविशेष से प्रतिवद्ध मान लिहल जाउ त एह कहानी में छीवि निकाले में ढेर मेहनत ना लागी बाकिर साँचो लेखक में ई प्रतिबद्धता बा का ? हमरा समझ से धुँआ के कहानीकार कवनो वादविशेष का मोहाराक्ति में नइखे परे पावल । ऊ त बस अपना घुटन के अभिव्यक्ति देले बा । अपना चतुर्दिक बिखरल परिवेश के जहाँ तक संभव हो सकल बा, अपना दृष्टि-फलक में समेटे के कोशिश कइले, हू-ब-हू ओकर फोटोस्टैट चित्र उतारे के प्रयास कइले बा । कहीं ओकरा में छद्म नइखे, कहीं छलावा नइखे ।

'खनतलासी' ईमानदारी का साथ जूझत मेहनत-मसक्कत से कइसहूँ अपना जिनिगी के जिआवत-मुआवत वेघर-दुआर के एने-ओने छिछियात, खानावदोश नेटुआ लोगन पर जिनकर आकाश ओढ़ना बा आ जमीन विछौना, पुलिस के जोर-जुलुम के कथा बा । खनतलासी सदियन से जोर-जुलुम के जार अंगेजत अपना बहिन-बेटी-बहू के इज्जत सहेजत गरीब लोगन के अत्याचार आ दमन का विरुद्ध दूटूक जवाब के कथा था, जवाबी संघर्ष के कथा बा । कहानी में आरम्भ से अन्त तक प्रवाह के अविच्छिन्नता बा । भाषा कहीं-कहीं काव्यात्मक हो गइल बा, विशेषत: कहानी के प्रारम्भ मे जहाँ प्रकृति के सजीव चित्र उरेहल गइल बा । ई प्रकृति-चित्रण कहानी खातिर उचित वातावरण तइयार करे में महत्व-पूर्ण योगदान देता । प्रस्तुतीकर का अनोखापन से कहानी वहुते उच्चकोकि के हो गइल बा ।

भारत-चीन युद्ध का संदर्भ में लिखल 'होसिला' के मूल स्वर राष्ट्रीयता के भावना में सउनाइल-बोथाइल बा । देश पर आक्रमण का स्थिति मे ग्रामीण जनता के सजगता आ अनुराग-त्याग के जीवंत चित्र एह कहानी में प्रस्तुत कइल गइल बा । कथोपकथन का माध्यम से युद्ध के मूलभूत कारण आ विभीषिका पर भी प्रकाश डालल गइल बा । कुछ कथन त बहुते विचारपूर्ण आ मार्मिक बाड़सन ।

'लड़ाई बड़ा बाउर होला..... अतना खराब की का कहीं । केहूँ के जान मार दिहला पर फाँसी हो जाला, केहू के अत्याचार पर दंड दिआला । लड़ाई खातिर कवनो कानून ना होला । जे जतने खून पी सकता, ओतने बहादुर बा ।'

× × × ×

'नेह-छोह आ प्रेम-मुहब्बत के परख त कुकुरो-बिलार क लेला त का इन्सान ना कर सके ?.....इन्सान अपना आत्मा के मुँह जब जाब देला त ओकर विवेक मर जाला, ओकरा आदमियत के दम टूट जाला एह हालत में आदमी खुदगरजी

www.bhojpurisahityangan.com

में बउरा जाला—ओकरा खाली हमही हम लउकेला, तूँ के इचिको गुमसुम ना भेंटे। इन्सान हैवान बन जाला, बेलकुल दनवाँ-दईत। लड़ाई त एही खुदगरजी के लहोक ह, धाह ह जवना में आदमियत जर के खार हो जाले।

कहानी पाठक के मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव छोड़ जातीया।

दलबदलू के डायरी भ्रष्ट राजनीति के कथा बा, प्रजातंत्र के प्रहरी कहाये वाला नेता लोगन के कच्चा चिट्ठा बा। सैद्धान्तिक राजनीति मात्र कहे के चीज रह गइल बा अब। कुर्सी खातिर दल-परिवर्तन नेता लोग खातिर आम बात हो गइल बा। जनता के धोखा देत लोग का तनिको आहस नइखे लागत। अइसन बात नइखे कि जनता एह लोगन का बहुरूपियापन से परिचित नइखे। चुनाव के समय के समय में कतना दुआरी ई लोग दुरदुरावल जाता, फींचल जाता बाकिर राजनीति का दाव-पेंच में माहिर भइला का वजह से लोग का लाज शरम घोर के पीए में तनिकों देरी नइखे लागत आ फेरू जनता के कवनो ना कवनो पट्टी पढ़ा के लोग चुनाइये जाता।

कहानी एगो भ्रष्ट मंत्री का डायरी के रूप में लिखल गइल बा। भोजपुरी कथा-साहित्य में डायरी का रूप में लिखल कहानियन के संख्या ढेर नइखे बाकिर संख्या जवन होखे 'दलबदलू के डायरी' एह कहानियन में शीर्ष पर बा।

'लहोक' के कथानक गाँव-गाँव में विआपल अन्तर्जातीय संघर्ष पर आधारित बा। बड़ छोट, धनी-गरीब के भेद, देहात में जमाना से चलल आवता। पहिले छोट के पास, गरीब के पास चेतना ना रहे, सवाँस ना रहे। एह से ओकरा पास प्रतिरोध के आवाज ना रहे। अब सभे अपना स्थिति आ अधिकार का सम्बन्ध में सचेत बा। धनी आ बड़का लोग सदियन से छोट के दबावेवाला अधिकार सहजे छोड़े के तइयार नइखे आ छोट अब दबे के तइयार नइखें। फल होता आपस में टकराव आ एह टकटाव के अन्तिम परिणत होता एक दोसरा के जान लीहल, कइगहूँ रास्ता से हटावल।

'एगो अउर अभिमन्यू' संग्रह कें अन्तिम आ अत्यधिक सशक्त कहानी बा। कहानी बटाईदारी के समस्या पर आधारित बा। कानून बनिये गइला से समस्या के अन्त नइखे हो पावत। कानून त ओकरा खातिर बा जेकरा पास शक्ति नइखे, समरथाई नइखें। जेकरा शक्ति बा, धन बा, ओकरा कानून के अवहेलना करत कतना देरी लागता? एह अर्थ प्रधान युग में धने सब कुछ बा।

www.bhojpurisahityangan.com

धने का बल पर कानून के अवहेलना करेवाला लोगन का देह का बदला पुलिस के संरक्षण आ मदत भेंटाता। गम्हीरा कवनो व्यक्तिविशेष नइखे बलुक समस्त गरीब दलित वर्ग के आधुनिक चेतना के प्रतीक बा। छल-बल से भलहीं गम्हीरा मारल जाता बाकिर सांच पूछीं त ऊ मरियो के जिन्दा रह जाता। जवना खातिर ऊ शहीद होता, तनिको बिरो नइखे पावति बलुक ओकरा में गम्हीरा के मउवत अउरी हूव भरजातीया। तबे त बसन्ती कलक्टर का सोझा उनके दीहल पांच हजार के चेक टुकी-टुकी क के फेंक देतीया आ बाघिन अस बिफरि उठतीया— 'हमरा आदमी के मरला के सरकार उनका लोहू के मोल देतीया··· हमरा दया ना चाहीं, भीख ना चाहीं ····· हम गरीब बानी। गरीब का दया ना चाहीं, मरउव्वत ना चाही।····ओकरा आपन हक चाहीं। ऊ हक खातिर लड़त मार दिहल गइले··· त हम हक लेब, लड़के लेब····· हमार बेटा लड़के ली····· हजारन, लाखन गरीब लोग आपन हक ली आ लड़के ली।

कहानी के नाग बहुते सटीक बा। गम्हीरा के चरित्र एगो आदर्श का रूप में प्रस्तुत कइल गइल बा।

धुआं के कहानी आम आदमी के द्वन्द्वग्रस्त जिनगी के, समाज के क्रूर व्यवस्था आ ओकरा विरूद्ध संघर्ष शक्तियन के सहीं दस्तावेज बाड़ीसन। एह कहानियन का पात्रन के पैदाइस कल्पना के कोख से नइखे भइल। ई पात्र कवनो पाठक खातिर अनचिन्हार नइखसन। एहनी के रातोदिन समाज में देखल जाता। हर पात्र का साथे कहानीकार ईमानदारी बरतले बा। कवनो पात्र का संगे अन्याय नइखे होखे पावल।

कथ्य के सफाई-सुघराई धुआं के हर कहानी में बा। कवनो कहानी प्रतीकात्मक भारीपन से बोझिल नइखे। आधुनिक चेतना का जटिलता के रूम्हारत-सहेजत एह कहानियन के सबसे बड़ खूबी बा अपना के जटिलता से बचावल। 'बालू के भीत' के छोड़ के अउर कवनो कहानी कथ्यगत उझुरहर से आक्रान्त नइखे। हलांकि कहानीकार एह संभावित जटिलता के चरचा अपना वक्तव्य में कइले बा बाकिर हर जगह ऊ अतना सजग आ सावधान रहता कि कवनो कहानी जटिलता का जहुआ में नइखे परे पावत। अपना वैचारिकता के कहानीकार कतहूं प्रमुख नइखे होखे देले।

ब्रजकिशोर जी कहानीकार का संगे-संगे कवियो हउवन। 'धुआं' के प्रकाशन का पहिले उनकर एगो कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुकल बा। बाकिर मजा के

www.bhojpurisahityangan.com

बात ई बा कि 'धुआँ' के कहानियन के पढ़ला का बाद केहू ना कह सके कि ई कवनो कवि-कथाकार के रचना हइसन। कवि-कथाकार आ अकवि-कथाकार का रचनन में कुछ मूलभूत अन्तर होला। कवि कथाकार कवनो सूक्ष्म भाव का ओर भागेला आ अकवि कथाकार घटनात्मकता का ओर। बृजकिशोरजी के कहानियम में घटनात्मकता के प्रधानता बा। अइसे भाषा में काव्यात्मक कोमलता आ तरलता कुछ स्थलन पर दृष्टव्य बा बाकिर ई ओही जगह पर बा जहाँ प्रकृति आपन माया जाल पसरले बा।

बृजकिशोर का भाषा के एगो आपन मिजाज, एगो आपन अन्दाज बा। भाषा हर जगह सहज बा, सरस बा। कतहूँ कुकाठ नइखे।

बृजकिशोर के नाम भोजपुरी के कथा-आलोचकन का श्रेणी में अगली पाँत में आवेला। भोजपुरी कथा-कहानी का संपादन के माध्यम से उनका एह रूप के परिचय सभका बा। एही रूप का धूप में धुआँ के कहानी चमकदार भइल बाड़ीसन, आबदार आ सहूरदार भइल बाड़ीसन।

कुल्ह मिला के 'धुआं' भोजपुरी कथा-साहित्य के एगो बहुते बड़ उपलब्धि बा।

भोजपुरी दिशाबोध के कथाप्रधान पत्रिका

'पाती'

सम्पादक : डॉ० अशोक द्विवेदी

भोजपुरी साहित्य संस्थान, उत्तर प्रदेश

मिड्ढी, बलिया

www.bhojpurisahityangan.com

'दि भोजपुरी रिव्यू'

बहुत दिन से हमरा मन में एगो कल्पना बा। कल्पना ई बा कि भोजपुरी का बारे में एगो त्रैमासिक पत्रिका निकलित अंग्रेजी में। नाँव रहित 'दि भोजपुरी रिव्यू'। एह पत्रिका में भोजपुरी के कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध जइसन रचनात्मक विधा के श्रेष्ठ कृतियन के अनुवाद रहित, भोजपुरी के साहित्य पर आ साहित्यिक गतिविधि पर समीक्षात्मक, परिचयात्मक आ विवरणात्मक लेख रहित, भोजपुरी भाषा के विशिष्ट पहलुअन पर विवेचनात्मक लेख रहित, भोजपुरी के संगठनन आ आयोजनन के विवरण, झाँकी आ ओपर टिप्पणी रहित, आ कुछ अइसनको लेख रहित जे राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी के अस्तित्व आ अस्मिता के पहचान करावे में मदतगार होखित।

पिछला कई बरिस से, भोजपुरी में रचना का दिसाईं, जइसन लहर उठल बा, ओइसन ओकर प्रचार-प्रसार हो नइखे पावत। आ सही प्रचार बिना काम बिगड़त बा। प्रचार से इहाँ हमार मतलब ओह लोगन का बीचे प्रचार से नइखे जे कि भोजपुरी भाषी बा। भोजपुरी भाषी लोगन में भोजपुरी के साहित्यिक उपलब्धि के व्यापक प्रचार-प्रसार के त बहुत जरूरत बड़ले बा। बाकिर इहाँ हमार मतलब ओह लोगन का बीचे भोजपुरी के प्रगति के प्रचार से बा जे भोजपुरी भाषी नइखे, आ जे भोजपुरी नइखे जानत-बूझत।

जे लोग भोजपुरी भाषी नइखे, आ जे भोजपुरी नइखे जानत-बूझत, ओह लोगन का बीचे, भोजपुरी के साहित्यिक उपलब्धि के प्रचार-प्रसार एह से जरूरी बा कि भोजपुरी के राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता देबे-दियावे में अइसनके लोगन के संख्या बेसी बा। एह से, देश-दुनिया में भोजपुरी के साहित्यिक अस्तित्व के बोध करावे खातिर अंग्रेजी के सहारा लिहल कारगर होई।

राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति पावे खातिर हिन्दी के माध्यम अपनावल त निश्चित रूप से बढ़िया होई। आज ले, भोजपुरीतर-भाषी लोगन में भोजपुरी के साहित्यिक प्रगति के जे भी प्रचार-प्रसार भइल बा, जादेतर हिन्दिए का माध्यम से भइल बा। हिन्दी के पत्र-पत्रिकन में भोजपुरी विषयक लेख जबतब आवते

www.bhojpurisahityangan.com

रहेला। भोजपुरी के बढ़िया रचनात्मक कृतियन के अनुवादो हिन्दी पत्र-पत्रिकन में आवे के चाहीं। भोजपुरी का बारे में एगो पत्रिका हिन्दियों में निकले त बढ़िया होई, हालांकि हिन्दी में अलग से अइसन पत्रिका नाहियों निकले तबो हिन्दी पत्र-पत्रिकन का माध्यम से ई काम बखूबी हो सकत बा, आ काफी कुछ होइयो रहल बा।

बाकिर, एकरा अलावें, राष्ट्रीय स्तर पर सगरो पहुंचे खातिर अंगरेजी के सहारा लेवे के जरूरत एह से बा कि एह बहुभाषी देश के बहुतेक भाग में अंगरेजी के भूत अबहीं ले सवार बा, आ ई भूत ओह क्षेत्रन में हिन्दी के चलहीं नइखे देत। ओह क्षेत्रन के आम लोग त ना, बाकिर बुद्धिजीवी लोग हिन्दी से अबहीं ले बिदकिए रहल बा, आ राष्ट्रीय सम्पर्क खातिर ऊ लोग अबहीं ले अंगरेजिए के माध्यम अपना रहल बा। एह देश में, कवनो भाषा के राष्ट्रीय स्वीकृति के निर्णय में, अइसन क्षेत्रन के जबर्दस्त हाथ बा। उदाहरण खातिर, साहित्य अकादमी के लिहल जाय। साहित्य अकादमी के सामान्य परिषद् के दू-अढ़ाई सौ सदस्यन में, लगभग आधा अइसने क्षेत्र के लोग बा। भोजपुरी के मान्यता खातिर अइसनो लोग के बतावे के पड़ी कि भोजपुरी में का-कुछ आ कइसन-कुछ लिखाइल बा आ लिखा रहल बा। ई काम तबे आसान हो सकी जब ई बात ओही भाषा में ओह लोगन तक पहुंचा दिहल जाय जवना भाषा में ऊ लोग सुने के आ बूझे के तैयार बा।

साहित्ये अकादमी ना, अध्ययन, शोध, अनुसंधान आ लेखन-वाचन के आउर-आउर क्षेत्रन में भोजपुरी के सार्वदेशिक स्वीकृति पावे खातिर अंगरेजी के मदत काम के साबित होई। एह देश के राष्ट्रभाषा बनन का पांत में भोजपुरी के बइठावे खातिर संविधान के अष्टम अनुसूची में भोजपुरी के शामिल करेके जे मांग बा, ओकरो पर निर्णय करे वाला संसद सदस्य लोगन में लगभग आधा ओइसने क्षेत्र के लोग बा जे अबहीं हिन्दी का बनिस्बत अंगरेजिए के सम्पर्क भाषा का रूप में इस्तेमाल जादे करत बा। एह से संविधान के अष्टम अनुसूची में भोजपुरी के शामिल करेवाला सवाल पर सभकर अनुकूलता पावे खातिर हिन्दी का अलावें अंगरेजियो में भोजपुरी साहित्य का बारे में जानकारी सुलभ करावल भोजपुरी का हित में होई।

हम कवनो अंगरेजी के तरफदारी आ वकालत नइखीं करत। अंगरेजी के मौजूदगी त भारतीय भाषा समन का विकास में सबसे बड़ बाधा बड़ले बा। बाकिर अबहीं, भोजपुरी के प्रचार-प्रसार आ स्वीकृति का दिसाईं, अबन काम

www.bhojpurisahityangan.com

हमनी का लेवे के बा, ओकरा खातिर अइसन अंगरेजी पत्रिका के उपयोगिता बहुत होई। एगो जमाना रहे कि हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार खातिर, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी का बारे में एगो अइसने अंगरेजी पत्रिका निकलले रहे। त भोजपुरियो के साहित्यिक प्रगति के सही जानकारी समस्त पहुंचावे खातिर अइसन अंगरेजी पत्रिका बड़ा काम के होई।

भोजपुरी के अन्तरराष्ट्रीय फइलाव, एह देश के कवनो दोसरा भाषा से कहीं जादे बा। पूरब से लेके पच्छिम तकले लगभग एक दर्जन देशन में भोजपुरी बोलल जाला। अइसन अन्तरराष्ट्रीय फइलाव जवना भाषा के होखे, ओह भाषा में लिखाइल साहित्य के अध्ययन-अनुशीलन अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अरदर ढंग से होखे के चाही। आज जब कि विदेशन के विश्वविद्यालयन में दुनिया के छोट-से छोट भाषा आ ओकरा साहित्य के शोध आ अध्ययन हो रहल बा, भोजपुरी के साहित्यिक उपलब्धि का ओर अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विद्वानन के ध्यान खींचे में अइसन अंगरेजी पत्रिका बहुते उपयोगी साबित होई।

ई काम त कवनो अइसने संस्था कर सकत बा जवन आर्थिक रूप से साधन-सम्पन्न होखे आ जेकरा वित्त-पोषण में सरकारी खजाना के पइसा लागत होखे। भोजपुरी खातिर अबहीं ले एके गो अइसन संस्था बा— पटना के भोजपुरी अकादमी, जेकर सालाना बजट लाखन के बा आ जेकर वित्त-पोषण बिहार सरकार का खजाना से हो रहल बा। अपना आउर काम का अलावें, 'दि भोजपुरी रिव्यू' जइसन कवनो अंग्रेजी पत्रिका के नियमित प्रकाशन के काम भोजपुरी अकादमी कर सके त एह से भोजपुरी के बहुत कल्याण त होइबे करी, ओह 'अकादमी' शब्द के भी सार्थकता होई जवन भोजपुरी अकादमी का नाम में पुछल्ला अइसन लागल बा।

—पाण्डेय कपिल

एगो राजा रहले

(भोजपुरी लोक कथा संग्रह)

चार रुपया

रामदुलारी

भोजपुरी संस्थान, २, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी संस्थान

२, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१

के अनमोल प्रकाशन

१—भोर हो गइल/कविता-संग्रह/पाण्डेय कपिल/५.००
२—पुरइन/कविता-संग्रह/शारदानन्द प्रसाद/२.००
३—जवानी के जगाइले/कविता-संग्रह/सिपाही सिंह श्रीमन्त/४.५०
४—ई हरनाकुस मन/कविता-संग्रह/पाण्डेय सुरेन्द्र/५.००
५—एह देस में/कहानी-संग्रह/कृष्णानन्द कृष्ण/३.५०
६—भोजपुरी कहानी विकास आ परम्परा/आलोचना/कृष्णानन्द कृष्ण/५.००
७—मीत मिलन/गीत रूपक/रामबचन सिंह यादव 'अंजोर'/३.२५
८—हम कुन्ती ना हईं/कहानी-संग्रह/पी. चन्द्रविनोद/५.००
९—फुलसुंघी/उपन्यास/पाण्डेय कपिल/७.००
१०—रेखा पर रेखा/रेखाचित्र/डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी/५.००
११—कलमिया नाहीं बस में/व्यक्तिगत निबंध/सत्यवादी छपरहिया/५.००
१२—मन के मोज/ललित निबन्ध/विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव/४.००
१३—परशुराम/पौराणिक उपन्यास/अरुण मोहन भारवि/४.००
१४—माटी के दीया/कविता-संग्रह/अनिल ओझा 'नीरद'/५.००
१५—सनेहिया/कविता-संग्रह/रघुनाथ चौबे/३.००
१६—दरबा/कहानी-संग्रह/वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय/४.००
१७—सतवन्ती/कहानी-संग्रह/रामनाथ पाण्डेय/५.००
१८—प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के/कहानी संकलन/
सं० सिपाही सिंह श्रीमन्त आ कृष्णानन्द कृष्ण/१२.००
१९—बाकिर/कविता-संग्रह/शारदानन्द प्रसाद/३.५०
२०—भइंसि के दूध/कहानी-संग्रह/डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध'
(चतुरी चाचा)/११.००
२१—बतकूचन/व्यक्तिगत निबन्ध/महेश्वराचार्य/२.५०
२२—सीता स्वयंवर/खण्ड काव्य/रामवृक्ष राय 'विधुर'/२.००
२३—एगो राजा रहले/लोककथा/रामदुलारी/५.००
२४—त्रिपुटी/समीक्षा/महेश्वराचार्य/३.००
२५—घर टोला गाँव/उपन्यास/पाण्डेय जगन्नाथप्रसाद सिंह/७.००